कबीर की साखियाँ

साखियों का सार -
प्रस्तुत साखियाँ कबीर दास जी द्वारा रचित हैं । इन दोहों में कबीर दास जी ने जाति-पाति, पूजा-पाठ, वाह्य आडम्बर जैसी सामाजिक कुरीतियों का विरोध किया है। कबीर दास जी के अनुसार मनुष्य की पहचान उसके नाम और जाति से नहीं बल्कि ज्ञान से होती है। मनुष्य को गलत बातों का प्रत्युत्तर नहीं देना चाहिए। गलत बातों को बढ़ावा न देकर उसे वहीं रोक देना ही ज्ञानी की पहचान है। कबीर दास जी ने अहंकार जैसी कुरीतियों का भी खण्डन किया है। हमें किसी को भी छोटा समझकर उसका तिरस्कार नहीं करना चाहिए। छोटी से छोटी वस्तु भी हमें पीड़ा पहुचाने में सक्षम हो सकती है। अतः हमें अपने अहंकार का त्याग कर सबके साथ प्रेम पूर्ण व्यवहार करना चाहिए। इससे हमारा मन शीतल होगा और बैर तथा द्वेष की भावना का नाश होगा।
कबीर दास जी ने अपने दोहों के माध्यम से बाहरी दिखावे पर भी प्रहार किया है। हमें ईश्वर की आराधना सच्चे मन से करनी चाहिए। ईश्वर सच्चे मन से किए गए स्मरण मात्र से ही प्रसन्न हो जाते हैं। लेकिन कुछ लोग ईश्वर की आराधना करते समय बाहरी दिखावे में इतना मग्न हो जाते हैं कि ईश्वर पर अपना ध्यान केन्द्रित ही नहीं कर पाते।

दोहों का भाव सौन्दर्य -
(1) दोहों में सामाजिक कुरीतियों को उजागर किया गया है।
(2) बाहरी दिखावे से अधिक ज्ञान को महत्वपूर्ण माना गया है। जिस प्रकार तलवार की उपयोगिता होती है उसको रखने वाला मयान पड़ा रह जाता है। उसी प्रकार समय आने पर ज्ञान ही हमारे काम आता है, बाहरी दिखावा महत्वहीन है।
(3) जात-पात, ऊँच-नीच की धारणाओं का विरोध किया गया है। घास को तुच्छ समझ कर जो उसपर ध्यान नहीं देते वो ये भूल जाते हैं कि वही घास जब आखों में चुभ जाती है तो घोर कष्ट होता है। अतः किसी को भी छोटा नहीं समझना चाहिए।
(4) अहंकार का त्याग कर प्रेम का संदेश दिया गया है। दूसरों पर दोषारोपण करने के बदले स्वयं के स्वभाव में परिवर्तन लाने की बात को सुन्दर ढ़ंग से प्रस्तुत किया गया है।

दोहों की भाषा शैली -
(1) सरल तथा सहज ढ़ंग से दोहों में नीतिपूर्ण बातें कहीं गई हैं।
(2) **'कह कबीर'', 'मुख माही''** में 'क' तथा 'म' वर्ण की आवृति एक से अधिक बार होने के कारण यहाँ अनुप्रास अलंकार है।
(3) कबीर दास जी की भाषा कई भाषाओं का मिश्रण है। इनके दोहों में राजस्थानी, पंजाबी, ब्रज, पूर्वी हिंदी तथा अवधी भाषा का प्रभाव है। दोहों में इन सभी भाषाओं का प्रयोग करने के कारण इनकी भाषा को खिचड़ी या सधुक्कड़ी भाषा कहा जाता है।

दोहों का उद्देश्य -
कबीर दास जी ने अपने दोहों के माध्यम से समाज में सुधार लाने का प्रयास किया है। केवल उस समय के समाज में ही नहीं बल्कि आज तथा आने वाले समय में भी इन दोहों की प्रासंगिक्ता बनी रहेगी। प्रस्तुत दोहें

कबीर दास जी के अनुभवों का निचोड़ है। इन दोहों का उद्देश्य समाज में व्याप्त कुरीतियों को समाप्त कर समाज में सुधार लाना है। ऊँच-नीच, ढ़ोंग-पाखण्ड की दुनिया से परे एक आदर्श समाज की स्थापना ही प्रस्तुत दोहों का उद्देश्य है।

दोहों का संदेश -

कबीर दास जी ने दोहों में मन का अंधकार दूर करने का संदेश दिया है। ताकि लोग स्वयं को एक सच्चा और बेहतर इंसान बना सके। इन दोहों में प्रेम की भावना को आवश्यक माना गया है। कबीर दास जी ने जीवन की सच्चाई से हमारा साक्षातकार करवाया है। प्रेम तथा सच्ची भक्ति के महत्व को बताया गया है।